अपर महानिदेशक की कलम से

मुझे वर्ष 2007-08 के दौरान भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की नवीन गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रस्तुत करने में प्रसन्नता हो रही है। अक्टूबर, 2007 में भारत सरकार ने एक नवीन स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डी एच आर) की स्थापना की घोषणा की जो भारत सरकार द्वारा देश में आयुर्विज्ञान अनुसंधान के महत्व की पहचान किए जाने का द्योतक है। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की गतिविधियों का निरीक्षण किए जाने के अलावा भारत में स्वास्थ्य और आयुर्विज्ञान अनुसंधान के संचालन और समन्वयन दोनों से संबद्ध भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद को इसके अनेक उत्तरदायित्व होंगे। इस निर्णय से राष्ट्र की सेवा में अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह और स्वयं को पुनः समर्पित करने में एक नवीन पहचान भी मिली है, महत्व और उत्तरदायित्व में भी वृद्धि हुई है।

कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं जिनसे प्राप्त प्रारंभिक परिणाम सुलभ हुए, यथा- पुणे और चेन्नई में संपन्न दोनों एच आई वी वैक्सीनों के प्रथम प्रावस्था के परीक्षणों से प्राप्त परिणाम। चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र में एम वी ए-आधारित एड्स वैक्सीन कैंडीडेट के साथ संपन्न परीक्षण से देखा गया कि संभावित वैक्सीन में स्वीकार्य स्तरों में सुरक्षा और भली-भांति सह्यता थी। इस संभावित वैक्सीन और डी एन ए वैक्सीन के साथ एक प्रमुख बूस्ट की प्रक्रिया जारी है जिससे यह मूल्यांकन किया जा सके कि इनकी अनुक्रियाओं के विस्तार को बेहतर बनाना संभव है अथवा नहीं।

चेन्नई और पुणे में एच आई वी-1 सीरम धनात्मक फेफड़े के क्षयरोग के चिकित्सा प्रबंध में लघुकालिक अन्तरायिक विधानों की प्रभावकारिता का अध्ययन करने के लिए एच आई वी - क्षयरोग पर एक टास्क फोर्स जारी है। ऐसे व्यक्तियों की संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम के विधानों के अनुरूप चिकित्सा की गई जिससे एच आई वी सीरम धनात्मक व्यक्तियों में क्षयरोग की चिकित्सा और पुनः रोग की चपेट में आने की दरों का आकलन किया जा सके। दोनों केन्द्रों से प्राप्त आंकड़ों से देखा गया कि एच आई वी ग्रस्त रोगियों में क्षयरोग रोधी चिकित्सा की अनुक्रिया संतोषजनक है। इसके अलावा, 6 और 9 माह की अवधि तक चिकित्सा प्राप्त रोगियों के बीच भी कोई अन्तर नहीं देखा गया। इस आबादी में औषध प्रतिरोध का स्वरूप एच आई वी रहित क्षयरोग ग्रस्त रोगियों के समान पाया गया। हालांकि, एच आई वी रहित वर्ग की तुलना में एच आई वी संक्रमित वर्ग में मृत्यु दरें उच्च थीं।

पुडुचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र द्वारा समन्वित बारम्बार वार्षिक चक्रों में एलबेण्डाज़ोल और डी ई सी के सह प्रयोग के साथ समुदाय में बड़े पैमाने पर संपन्न परीक्षण से प्राप्त आंकड़ों से देखा गया कि परिचालन के दृष्टिकोण से यह नीति संभाव्य है, समुदाय

द्वारा प्रयोग करने के लिए सुरक्षित है और लसीका फाइलेरिया रोग के नवीन संक्रमणों को कम करने के संदर्भ में केवल डी ई सी की तुलना में प्रभावी है। यह वर्ष 2015 तक इस रोग के समाप्त होने के साथ राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण नीति होगी।

परिषद के अनेक संस्थानों और केन्द्रों ने देश के विभिन्न भागों में चिकनगुन्या, डेंगी, जापानी मस्तिष्कशोथ, लेप्टोस्पाइरारुग्णता, एवियन इंफ्लुएंज़ा एवं अन्य स्थितियों के विभिन्न प्रकोपों का अध्ययन किया। इंफ्लुएंज़ा निगरानी नेटवर्क द्वारा इंफ्लुएंज़ा विषाणु के 250 उपभेद पृथक किए गए। इस वर्ष के दौरान राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे स्थित एच आई वी औषध प्रतिरोध प्रयोगशाला को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्यता प्रदान की गई। पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान को दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के लिए डब्ल्यू एच ओ H5 संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में मनोनीत किया गया।

इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (*आई जे एम आर*) का इंपैक्ट फैक्टर वर्ष 2006 में 1.244 से बढ़कर वर्ष 2007 में 1.670 हो गया जो अभी तक किसी भारतीय जर्नल के लिए सर्वाधिक है। परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रतिष्ठित वैज्ञानिक जर्नलों में 415 शोध पत्र प्रकाशित किए गए तथा भारतीय पेटेंट कार्यालय के साथ कुल 7 पेटेंट फाइल किए गए। परिषद द्वारा वर्ष 2007-2008 के दौरान कुल 1044 शोध परियोजनाओं और 534 शोध फेलोशिप्स को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

मैं माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ ए. रामदॉस, माननीया केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती पनाबाका लक्ष्मी, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग श्री नरेश दयाल तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अन्य अधिकारियों के प्रति आभारी हूं जिन्होंने पूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। मैं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अपने सहकर्मियों की सहायता और सहयोग के लिए भी आभार व्यक्त करता हूं।

एस. के. भट्टाचार्य

(डॉ. एस. के. भट्टाचार्य)

अपर महानिदेशक